गोरख पाण्डेय की कविताएं

तटस्थ के प्रति

चैन की बाँसुरी बजाइये आप
शहर जलता है और गाइये आप
हैं तटस्थ या कि आप नीरो हैं
असली सूरत ज़रा दिखाइये आप
(रचनाकाल 1978)

आँखें देखकर

ये आँखें हैं तुम्हारी
तकलीफ़ का उमड़ता हुआ समुन्दर
इस दुनिया को
जितनी जल्दी हो बदल देना चाहिये.

सच्चाई

मेहनत से मिलती है
छिपाई जाती है स्वार्थ से
फिर, मेहनत से मिलती है.

वतन का गीत

हमारे वतन की नई ज़िन्दगी हो
नई ज़िन्दगी इक मुकम्मिल ख़ुशी हो
नया हो गुलिस्ताँ नई बुलबुलें हों
मुहब्बत की कोई नई रागिनी हो
न हो कोई राजा न हो रंक कोई
सभी हों बराबर सभी आदमी हों
न ही हथकड़ी कोई फ़सलों को डाले
हमारे दिलों की न सौदागरी हो
ज़ुबानों पे पाबन्दियाँ हों न कोई
निगाहों में अपनी नई रोशनी हो
न अश्कों से नम हो किसी का भी दामन
न ही कोई भी क़ायदा हिटलरी हो
सभी होंठ आज़ाद हों मयक़दे में
कि गंगो-जमन जैसी दरियादिली हो
नये फ़ैसले हों नई कोशिशें हों
नयी मंजिलों की कशिश भी नई हो.

इंकलाब का गीत

हमारी ख्वाहिशों का नाम इन्क़लाब है !
हमारी ख्वाहिशों का सर्वनाम इन्क़लाब है !
हमारी कोशिशों का एक नाम इन्क़लाब है !
हमारा आज एकमात्र काम इन्क़लाब है !
ख़तम हो लूट किस तरह जवाब इन्क़लाब है !
ख़तम हो भूख किस तरह जवाब इन्कलाब है !
ख़तम हो किस तरह सितम जवाब इन्क़लाब है !
हमारे हर सवाल का जवाब इन्क़लाब है !
सभी पुरानी ताक़तों का नाश इन्क़लाब है !
सभी विनाशकारियों का नाश इन्क़लाब है !
हरेक नवीन सृष्टि का विकास इन्क़लाब है !
विनाश इन्क़लाब है, विकास इन्क़लाब है !
सुनो कि हम दबे हुओं की आह इन्कलाब है,
खुलो कि मुक्ति की खुली निग़ाह इन्क़लाब है,
उठो कि हम गिरे हुओं की राह इन्क़लाब है,
चलो, बढ़े चलो युग प्रवाह इन्क़लाब है ।
हमारी ख्वाहिशों का नाम इन्क़लाब है !
हमारी ख्वाहिशों का सर्वनाम इन्क़लाब है !
हमारी कोशिशों का एक नाम इन्क़लाब है !
हमारा आज एकमात्र काम इन्क़लाब है !

वाट्सऐप मैसेज जो चार पांच साल में वायरल हो जाता है

कुछ राइटविंग वाले लेखकगण इसे फैक्ट की तरह बनाकर किताब वगैरह में भी लिखने लगे हैं, कुछ दिन बाद ये रिफरेंस का रूप ले लेगा।

फिर लोग किताब का नाम लेकर कोट करेंगे फलनवा की किताब में लिखा है।

अगर ये सच है तो अंग्रेजों के आने के समय भारत में अनपढ़ों की संख्या इतनी ज्यादा थी कैसे थी? क्या 100- डेढ़ सौ गुरुकुल मिलाकर एक विद्यार्थी पढ़ाते थे?

आप सोचते रहिए कि अगर इतने गुरुकुल मिलकर भी भारत को गुलाम होने से नहीं बचा सके तो इनमें कौन सी शिक्षा दी जाती रही होगी?

आप ये भी सोचिए कि नालन्दा जैसे विश्वविद्यालय जब कई बार फूंके जाने के बाद भी अवशेषों के साथ बचे हुए हैं तो ये गुरुकुल क्या गांव की पुलिया पर चलाए जाते थे, और पुलिया ही कौन सी ही रही होगी? बाढ़ आयी गुरुकुल के सम्पूर्ण अवशेष ही बह गये, कुछौ ना बचा?

ना ज्ञान, ना इमारत?

दावा है कि हायर एजुकेशन भी मिलती थी, मैं पूछता हूं कितनी हायर?

करोड़ों साल पुराने डायनासोर तक के अवशेष मिल जा रहे हैं बस वैदिक विमान का ब्लैक बॉक्स नहीं मिल रहा?

सोचिए एक गुरुकुल में अगर एक भी गुरु रहा होगा तो इस हिसाब से भारत तो फुल्ली विश्व गुरु रहा होगा।

इतने गुरु और विश्व गुरुओं के बावजूद अगर मुगलों से ठाठ से शासन किया, फिर अंग्रेजों ने तमाम राजपूत शासकों को दरबारी और पेंशनधारी बनाकर छोड़ दिया तो गुरुकुल के गुरु घंटाल लोग क्या कर रहे थे? किसको कौन सी शिक्षा दे रहे थे?

जितनी संख्या इसमें लिखी हुई है,

सात लाख बत्तीस हजार, इतने तो गांव भी नहीं हैं अभी तक भारत में। तमाम जातियों के अलग अलग गांव होते हैं।

पढ़ने-लिखने का अधिकार किसको था, किन जातियों को था? जिसको था उसके कितने गांव रहे होंगे?

7 लाख 32 हजार ही क्यों?

लिखने वाले ने सात हजार एक सौ एक क्यों नहीं लिखा? थोड़ा शुभ हो जाता...

इंग्लैंड का पहला स्कूल 1811 में नहीं बल्कि 597ष्ठ में खुला था,नाम था किंग्स स्कूल कैन्टबरी।

इनको लगता है कि 1600 में ईस्ट इंडिया चलाने वाले अनपढ़ थे क्योंकि इनके हिसाब से इंग्लैंड पहला स्कूल तो 1811 में बना था।

लोग मूर्खता की चादर ओढ़ बिछा रहे हैं... इसलिए फेकम फेकाई में मत फंसिए।

मुकेश खन्ना के असली या नकली अकाउंट को छोड़िए,

मैं मैसेज के कंटेंट की बात कर रहा हूं, बिल्कुल सेम बात कि भारत में सात लाख गुरुकुल थे डीयू में मेरे प्रोफेसर ने क्लासरूम में बोली है। इसलिए मैं इस मैसेज के कंटेंट की ही बात कर रहा हूं।

-साइबर नजर

काला को सफ़ेद करना, कला है, और व्यापार भी

चंचल

नई पत्रकारिता का यही उसूल है । लाखों रुपए महीने के इन्हें पारिश्रमिक मिलता है , क्यों ? किस खूबी की चलते इसे इतनी क़ीमत दी जाती है ? रक़म आती कहाँ से है ? यह एक लम्बा खेल है । इनकी कमाई का एक ज़रिया है - ब्लैक मेलिंग ।

ब्लैकमेलिंग समाज में फैल चुकी चुलबुली बीमारी बन गयी है । यह केवल बड़े शहरों , बड़े घरानो या बड़े चैनलों द्वारा ही नही खेला जा रहा है। अब तो गाँव गाँव ऐसे पत्रकार हो गये हैं , - "कुछ दो, नही तो" बायरल " कर देंगे ।" ठीक वैसे ही जैसे जी न्यूज़ के ऐंकर सम्पादक सुधीर चौधरी ने उद्योगपति जिंदल से सौ करोड़ की माँग , एक खबर न छापने के लिए की। जिंदल अड़ गया , सुधीर चौधरी जेल चले गये । वही सुधीर चौधरी जिसे जी से हटाया गया , उनका काम है वे जाने , अब आ गया आज तक पर ।

दिल्ली है , खबरें बनती बाद में हैं , उड़ा दी जाती हैं पहले । ख़ाली बैठे निठल्ले दर्शकों में फैलाया गया - अब देखना मज़ा। छा जायगा आज तक । एक पत्रकार हैं , हालात को सामने रख कर , खुद रिटायर हो लिए हैं , बोले - "गांगा जमुना" (फिल्म) में कन्हैया लाल को जब कुकुर दौड़ाता है तो कन्हैया लाल धोती सम्भालते हुए बोलते हैं - एक मोती बाबू (ज़ालिम ज़मींदार) कम थे ? ससुरा तुम भी इसी में !

बहरहाल ! हम इस ऐंकर , एंकरानियों से दूर जा चुके हैं , यक़ीन मानिए नही देखता नही सुनता । कल हमे बताया गया कि यह सुधीर चौधरी अब नया कार्यक्रम ले कर आया है । बात टल गयी । आज तक चैनल के इस सुधीर चौधरी कार्यक्रम का नाम पाकिस्तान के मशहूर और मक़बूल पत्रकार हसन निसार के कार्यक्रम "ब्लैक ऐंड ह्वाइट" की हू ब हू नक़ल है । बस भाषा बदली है ।

हमे हंसी आयी , चोला बदल लेने से गीदड़ शेर नही बन जाता । हसन निसार उन पत्रकारों में गिने जाते हैं जो अपनी बेबाक़ी और साफ़गोई के लिए मशहूर हैं , और अपनी सरकार की खुल कर आलोचना करते हैं ।

ये चैनल , ये ऐंकर वही हैं जो टांग और लुंगी देख कर , किसी भी राहगीर को पाकिस्तानी बना देते हैं , टुकड़े टुकड़े गैंग, वग़ैरह चीखने लगते हैं । हसन निसार में तो ब्लैक ऐंड ह्वाइट नाम रखा है, इसे ह्वाइट की जगह मेल कर देते , कम से कम पत्रकारिता तो पारदर्शी हो जाती ।

उनका एक और मशहूर कार्यक्रम है - loose talk । अनवर मक़सूद और मोईन अख़्तर का । नाम तो ले लोगे लेकिन हसन निसार, अनवर मक़सूद और मोईन अख़्तर का जज़्बा , उनका ज्ञान , उनकी प्रस्तुति कहा से लाओगे ? आज यही "ब्लैक ऐंड ह्वाइट "का पोस्टर JNU कैंपस में मिला होता तो ?